

वर्तमान कृषि में गौठान की भूमिका

ओ.पी. सोनवानी*, हरि प्रसाद मोहले* और **बी. नाइटिंगेल देवी****

"छत्तीसगढ़ में जनसंख्या वृद्धि (22.61 प्रतिशत) तेजी से हो रही है, जिसके साथ-साथ प्रति व्यक्ति भूमि उपलब्धता (1.51 हैक्टर) कम होती जा रही है (जनगणना 2011-12)। आधुनिक समय में किसान उत्पादकता बढ़ाने के लिए रासायनिक दवाओं और उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग कर रहे हैं। इससे धीरे-धीरे मृदा उत्पादकता में लगातार कमी आ रही है। उत्पादन में बहुत अधिक निवेश, फसल में रोगों का उच्च स्तर, मृदा में नमी के स्तर में कमी, मृदा की स्वास्थ्य गुणवत्ता में कमी तथा भूमि की उर्वरता चिंतनीय होती जा रही है। इस प्रकार मृदा गुणवत्ता में हो रही कमी सहित गांव एवं कृषि की कई प्रमुख चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों का प्रमुख कारण प्राकृतिक एवं जैव संसाधनों का गांवों में लगातार अनुपयोग माना जा रहा है। बाहरी वस्तुओं पर आधारित होने के कारण मृदा उर्वरता में गिरावट के साथ लगातार खर्चे में बढ़ोतरी हो रही है।"

कृषि की चुनौतियों को रोकने के लिए गांवों में प्राकृतिक एवं जैव संसाधनों के साथ एक परिवर्तनशील और गतिशील व्यवस्था की जरूरत है। गौठान व्यवस्था में आधुनिक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण की सहायता से चुनौतियों से लड़ सकते हैं। एकीकृत विकास के साथ कृषकों की आय में वृद्धि तथा उन्नत कृषि के सपने को साकार किया जा सकता है।

*शिक्षक; **सहायक प्राध्यापक,मात्स्यिकी महाविद्यालय (दा. श्री वासुदेव चंद्राकर कामधेनु विश्वविद्यालय) कवर्धा-491995 (छत्तीसगढ़)

गौठान में उन्नत कृषि हेतु जैविक उत्पाद

- केंचुए (*आईसेनिया फोटिडा*) से बना वर्मीकम्पोस्ट
- वर्मीक्यूलाइट
- वर्मीवाश
- ट्राइकोडर्मा और स्यूडोमोनासयुक्त वर्मी खाद
- गौमूत्र।

क्या है गौठान

गांव की 1-2 हैक्टर उच्च भूमि जहां पशु सुरक्षित रह सकें, गांव के सारे पशुओं को आधे दिन तक एक जगह एकत्र रखा जा सके जहां वे दाना, पानी, छाया और पोषण प्राप्त कर सकें, ऐसे सुरक्षित पशु विश्राम स्थल को गौठान कहा जाता है। गौठान एक देशज व्यवस्था है, जिसे शासन





वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन

द्वारा आधुनिकता के प्रयोग के साथ गौठानों को विकसित किया जा रहा है।

गौठान के उद्देश्य

- पशुओं की सामूहिक चिकित्सा, टीकाकरण और नस्ल सुधार जैसे कार्यक्रम एक स्थान पर होने से सुचारू रूप से हो पाये।
- आधे दिन (कम से कम 3 घंटे) तक





गौठान में महिला स्वयं सहायता समूह द्वारा संचालित वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन प्रक्रिया (गोबर एकत्रण से भण्डारण)



गौठान में पशु





वर्मी खाद से उद्यानिकी नर्सरी में पौधे तैयार करना और उद्यानिकी फसल उत्पादन

दाना, पानी, छाया के साथ पशु विश्राम स्थल का विकास।

- पशुधन का सम्पूर्ण सदुपयोग केवल दूध नहीं बल्कि उसके गोबर, मूत्र एवं उनके सुयोग से बने हुए विभिन्न जैविक खाद, जीवामृत व वर्मीकम्पोस्ट जैसे उत्पादनों में रूपांतरित कर उन्हें खेतों तक पहुंचाना एवं खेतों में जैविक कार्बन की संस्थापना।
- गोबर एवं गौ-मूत्र आधारित विभिन्न जैविक खाद (वर्मीकम्पोस्ट, वर्मीवाश, ट्राइकोडर्मा और स्यूडोमोनासयुक्त वर्मी खाद) उत्पादन के साथ-साथ गौठान में तेलमिल, राइसमिल, सुधारने के उपकरण इत्यादि रखकर गांव के भीतर लघु उद्योगों का विस्तार करना तथा सोलर पैनल एवं गोबर गैस से प्राप्त बिजली का सदुपयोग।
- लावारिस पशुओं का प्रबंधन
- अच्छे जीवनयापन के लिए स्वयं सहायता समूह के जरिये वैज्ञानिक विधि से गौठान प्रांगण के तालाबों पर मछली पालन को बढ़ावा देना।



तलाबों में गोबर का उपयोग करके प्राकृतिक मछली चारा उत्पादन

- स्वयं सहायता समूह के माध्यम से कृषि एवं संबंधित क्षेत्र जैसे-मछली पालन एवं कुक्कुट पालन आदि से उद्यमिता का विकास।

गौठान में एकीकृत प्रबंध से रोजगार, जीवनयापन के साथ-साथ जैविक खाद के उपयोग से कम लागत में फसल उत्पादन, अनुकूल पर्यावरण, लंबा व स्थायी परिणाम, अच्छा मृदा स्वास्थ्य, उपज में सुधार, पौधों के लिए स्वास्थ्यकारी और उन्नत कृषि का सपना साकार किया जा सकता है। ■